(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

ANALYTICAL STUDY OF THE MUSLIM SOCIAL REFORM MOVEMENTS OF THE 19TH CENTURY

Dr. Manoj Singh Yadav

Asst Prof, Dept of History, Kashi Naresh Govt PG College, Gyanpur, Bhadohi

---

19वीं शताब्दी के मुस्लिम समाज सुधार आन्दोलनों का विष्लेशणात्मक अध्ययन

डॉ0 मनोज सिंह यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर–इतिहास, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही।

---

19 वीं शताब्दी के समाज सुधार आन्दोलन की जो लहर चली उससे भारत का मुस्लिम समाज भी अछुता नहीं रहा। मुस्लिम समाज में जो आन्दोलन हुए उनमें वहाली आन्दोलन, अलीगढ़ आंदोलन प्रमुख थे। 1891 में प्रकाषित अमीर अली की पुस्तक ''इस्लाम की आत्मा'' भारतीय मुसलमानों में सुधारवादी और पुनरूत्थान वादी प्रकृति की प्रतीक थी।

सर सैय्यद अहमद खाँ की उदारवादी विचारधारा 1885 से निष्चित रूप से पीछे हटने लगी थी और उनमें यह विष्वास पनपता गया कि ''भारत में मुसलमानों की सुरक्षा और दृढ़ता (अलीगढ़ आन्दोलन के प्रारम्भिक विचार) के लिए स्वराज की कल्पना बिल्कुल अव्यवहारिक एवं हानिकर है तथा यह मुसलमानों और अग्रेंजो के मेल से ही संभव होगी। वास्तव में भारत में भी मुसलमानों के प्रति अंग्रेजों का रूख बदल चुका था और उनकी नीति अब मुस्लिम समाज को अपनी ओर मिलाने की थी। ˘ण ˋण ठस्न्छज ने मुसलमानों से अपना हक मांगने की अपील की और कहा '' यदि मुसलमान केवल अपनी षक्ति को पहचान ले तो उनकी अवहेलना नहीं होगी तथा सरकार उनसे बुरा व्यवहार नहीं करेगी। इंग्लैण्ड में हमें बराबर भारत में मुस्लिम विद्रोह का भय बना रहता है और यदि मुसलमान एक षब्द भी कह देता है तो उस पर 20 हिन्दुओं से ज्यादा ध्यान दिया जाता है। अतः

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

मुसलमान चुपचाप बैठे रहे और तकदीर को कोसते रहे तो स्वाभाविक है कि ब्रिटिष जनता को उन पर ध्यान देने की जरूरत नहीं होगी।

वहाबी आंदोलन तथा वलीउल्लाह आंदोलन–इस आंदोलन को भारत में सबसे ज्यादा प्रचारित करने का श्रेय सैय्यद अहमद बरेलवी एवं इस्लाम हाजी मौलवी मुहम्मद को दिया जाता है। भारत में वहाली आंदोलन ईरान से प्रेरित होकर चलाया गया था। सर्वप्रथम इस आंदोलन ने ही मुसलमानों पर पड़ने वाले पाष्चात्य प्रभावों का विरोध किया आंदोलन द्वारा इस्लाम धर्म की पवित्रता को बनाये रखने का प्रयास किया गया। अपने प्रारम्भिक दिनों में यह आंदोलन पंजाब में सिख सरकार के विरूद्ध चलाया गया था। सर्वप्रथम इस आंदोलन ने ही मुसलमानों पर पड़ने वाले पाष्चात्य प्रभावों का विरोध किया। आंदोलन द्वारा इस्लाम धर्म की पवित्रता को बनाये रखने का प्रयास किया गया। अपने प्रारंभिक दिनों में यह आंदोलन पंजाब में सिख सरकार के विरूद्ध चलाया गया। इस आंदोलन का मुख्य केन्द्र पटना में था। इस आंदोलन को 1870 के बाद दबा दिया गया। इस आंदोलन का मुख्य नेता षेख बरामत अली तथा हाजी षरीअत उल्ला थे।

अलीगढ़ आन्दोलन– सैय्यद अहमद के अतिरिक्त इस आंदोलन के अन्य प्रमुख नेता थे नजीर, चिरागअली, अल्ताफ हुसैन, मौलाना षिवली नूमानी इत्यादि। दिल्ली में जन्मे सैय्यद अहमद ने 1839 ई0 में ईस्ट इंडिया कम्पनी में नौकरी कर ली। कम्पनी की न्यायिक सेवा में कार्य करते हुए 1857 ई0 के विद्रोह में उन्होने कम्पनी का साथ दिया था। सर सैय्यद अहमद खाँ (1817–1898) पहले एक राश्ट्रवादी और हिन्दू मुस्लिम एकता के रूप में प्रकट हुए लेकिन आगे चलकर वे घोर प्रतिक्रियावादी बन गये और उन्होने हिन्दुओं और मुसलमानों के सहअस्तित्व से इंकार कर दिया।

1857 के महान विद्रोह के पष्चात सरकार की यह धारणा बन गयी थी कि 1857–58 के शडयन्त्रों के लिए मुसलमान ही उत्तरदाई है और वे एक अत्यन्त शडयन्त्रकारी लोग हैं। 1860 1870 के आस पास हुए बहाली शडयन्त्रों ने यह धारणा और दृढ़ कर दी। फिर 1870 के W.W. HUNTER *की* INDIAN MUSLIM *(भारतीय मुसलमान) नाम की पुस्तक में एक*

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

सुझाव दिया गया कि मुसलमानों से समझौता करना चाहिए और निष्चित रियायतों द्वारा अंग्रेजी सरकार की ओर मिलाना चाहिए। मुसलमानों का एक वर्ग जिसके नेता सर सैय्यद अहमद खाँ थे सरकार के इस संरक्षण भरे रूख को स्वीकार करने को उद्धत थे। उन्होने मुसलमानों के दृश्टिकोण को आधुनिक बनाने का प्रयास किया। उन्होने चाहा कि मुसलमान लोग अंग्रेजी सरकार के तथ्य को स्वीकार करें और उसके अधीन सेवा करना षुरू कर दें। वह अपने इस प्रयत्न में बहुत कुछ सफल भी रहे।

उन्होने सामाजिक कुरीतियों को दबाने प्रयत्न भी किया उन्होने ''पीरी मुरादी प्रथा'' को समाप्त करने का प्रयास किया। पीर लोग अपने को सूफी मानते थे और अपने मुरीदों को कुछ रहस्यमय षब्द देकर उनके गुरू बन जाते थे। उन्होने दास प्रथा को भी इस्लाम के विरूद्ध बतलाया। उन्होने अपने विचारों का प्रचार एक पत्रिका ''तहजीब–उल–अखलाक'' द्वारा किया। परन्तु उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य ''कुरान पर टीका'' था जिसमें उन्होने परम्परागत टीकाकारों की आलोचना की और समकालीन वैज्ञानिक ज्ञान के प्रकाष में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होने कुरान के अध्ययन पर बल दिया और कहा कि ईष्वरीय ज्ञान की व्याख्या ईष्वरीय कार्य द्वारा जो सबके प्रमुख हैं होनी ही चाहिए। सैय्यद अहमद ने अपने सुधार प्रयत्नों द्वारा मुस्लिम वर्ग का उत्थान करना चाहा। उन्होने 1875 ई0 में अलीगढ़ में एक अलीगढ़ मुस्लिम स्कूल जिसे ऐंग्लों ओरियन्टल स्कूल भी कहा जाता है। की स्थापना की इस केन्द्र पर मुस्लिम धर्म पाष्चात्य विशय तथा विज्ञान जैसे सभी विशयो ंकी षिक्षा दी जाती थी। 1920 ई0 तक यही केन्द्र अलीगढ़ मुस्लिम विष्वविद्यालय के रूप में सामने आया। सर सैय्यद अहमद खाँ ने भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस का स्वागत नहीं किया क्योंकि उन्हे आषंका थी कालान्तर में यह संस्था हिन्दुओं की एक मात्र संस्था रह जायेगी। उनके अनुसार षिक्षा के प्रमुख उद्देष्य थे।

1–धार्मिक आस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए धार्मिक तत्व का ज्ञान कराना तथा परम्परागत बुद्धि से मेल मिलाना।

2–छात्रों में उच्च चरित्र का निर्माण करना।

3–विज्ञान की उच्चतम षिक्षा और बुद्धिवादी दृश्टिकोंण का प्रचार करना।

उन्होने अपने इन उद्देष्यों को पूरा करने के लिए अनेकों स्कूलों की स्थापना किया। उन्होने वैज्ञानिक समितियों की स्थापना की और मुस्लिम षिक्षा सम्मेलन संगठित किए। सम्मेलन के मुख्य उद्देष्य थे।

1–मुसलमानों में पष्चिमी षिक्षा का प्रसार।

2–मुसलमानों द्वारा स्थापित संस्थाओं में धार्मिक षिक्षा का उचित प्रबंध करना।

3–पाष्चात्य और धर्मषास्त्र की षिक्षा को प्रोत्साहन।

4–पुराने भारतीय मकतबो के मापदण्ड में सुधार और उन्नति।

देवबन्द षाखा *: मुसलमान उलेमाओं ने जो प्राचीन मुस्लिम विद्या के अग्रणी थे देवबन्द आन्दोलन चलाया। यह एक पुर्नजागरणवादी आन्दोलन था जिसके दो मुख्य उद्देष्य थेः–*

1–मुसलमानों में कुरान तथा हदीस की षुद्ध षिक्षा का प्रसार करना।

2–विदेषी षासको के विरूद्ध व ''जिहाद'' की भावना को जीवित रखना।

उलेमाओं ने मुहम्मद कासिम बनौल्वी (1832–1880) तथा रषीद अहमद गंगोही (1828–1905) के नेतृत्व में देवबन्द उत्तर प्रदेष के जिला सहारनपुर में एक विद्यालय खोला(1866) जिसका उद्देष्य यह था कि मुस्लिम सम्प्रदाय के लिए धार्मिक नेता प्रषिक्षित किये जायें। पाठषाला के पाठ्यक्रम में अंग्रेजी षिक्षा तथा पाष्चात्य संस्कृति पूर्ण रूप से वर्जित थी। इसमें इस्लाम धर्म की मौलिक षिक्षा दी जाती थी और उद्देष्य यह था कि मुस्लिम सम्प्रदाय का नैतिक तथा धार्मिक पुनरूद्धार किया जाय। यह अलीगढ़ आन्दोलन के पूर्णतयाः विरूद्ध था। जो पाष्चात्य षिक्षा तथा अंग्रेजी सरकार की सहायता से मुसलमानों का कल्याण चाहता था। देवबन्द विद्यालय विद्यार्थियों को सरकारी सेवा अथवा सांसारिक सुख के लिए तैयार नहीं करता था अपितु इस्लाम धर्म को फैलाने के लिए षिक्षा देता था इसके फलस्वरूप यहाँ भारत के भिन्न–भिन्न भागों से तथा विदेषों से भी विद्यार्थी आने लगे।

राजनीति में देवबन्द षाखा 1885 में बनी भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस का स्वागत किया। 1888 में देवबन्द के उल्मा ने सैय्यद अहमद खाँ की बनाई संयुक्त भारतीय राजभक्त सभा तथा मुस्लिम एंग्लो ओरियन्टल के विरूद्ध फतवा (धार्मिक आदेष) दे दिया। कुछ आलोचकों

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

की धारणा है कि देवबन्द उल्मा का समर्थन किन्ही निष्चित विचारों और राजनीतिक विष्वासों के कारण अथवा अंग्रेजों के कारण नहीं अपितु सैय्यद अहमद खाँ के क्रिया कलापों के विरोध में किया गया था।

महमूद उल हसन (1851–1920) जो देवबन्द षाखा के नये नेता थे, ने इस षाखा के धार्मिक विचारों की राजनीतिक तथा बौद्धिक रंग देने का प्रयत्न किया। उन्होने राश्ट्रीय आकांक्षाओं तथा मुस्लिम निश्ठावानों ने समन्वय स्थापित किया जिसके फलस्वरूप 'जमाअत–उल–उलमा' ने हसन के विचारों के अनुसार धर्म की रक्षा तथा मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों को भारत की एकता तथा राश्ट्रीय उद्देष्यों के परिप्रेक्ष्य में रखकर एक ठोस रूप प्रदान किया गया।

***अहमदिया आंदोलन**–मिर्जा गुलाम अहमद (1838–1908) द्वारा 19 षताब्दी के अंत में स्थापित इस संस्था का नाम उन्ही के नाम पर अहमदिया आंदोलन पड़ा इस आंदोलन के नेता स्वयं को हजरत मुहम्मद के बराबर मानते थे तथा कालान्तर में मिर्जा गुलाम अहमद स्वयं को भगवान श्रीकृश्ण का अवतार मानने लगे थे। उनके नेतृत्व में अहमदिया आंदोलन ने सभी धर्मों में सुधार का लक्ष्य बनाया। 1885 में स्थापित 'अन्जुमन–ए–हिमायत–इस्लाम' ने मुसलमानों की सामाजिक नैतिकता को बढ़ाने और उनका बौद्धिक विकास करने की दिषा में काफी काम किया। गुलाम अहमद कादिनी का कहना था कि जब तक इस्लाम धर्म में नई उदारवादी भावना का प्रवेष नहीं होगा और वह आधुनिक पाष्चात्य नीतिवाद को ग्रहण नहीं करेगा तब तक उसकी प्रगति नहीं हो सकती। मध्य युगीन जिहाद की प्रवृत्ति से गुलाम अहमद को कोई लगाव नहीं था। उनका स्पश्ट मत है कि इस जिहाद की भावना ने आपसी भाई चारे की भावना पर कुठारघात किया था। गुलाम अहमद पाष्चात्य षिक्षा के समर्थक थे और चाहते थे कि मुसलमान अधिक से अधिक संख्या में अंग्रेजी षिक्षा को ग्रहण करें। उनका कहना था कि पाष्चात्य सभ्यता से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। गुलाम अहमद का हमेषा यही प्रयत्न रहा कि मुस्लिम समाज आधुनिकीकरण के पथ पर बढ़े। मिजी गुलाम अहमद ने अपनी पुस्तक 'बराहीन–ए–अहमदिया' द्वारा अपने सिद्धान्तों की व्याख्या की।*

मुसलमानों में समाज सुधार के वांछित परिणाम निकले इन प्रयत्नों ने मुस्लिम सम्प्रदाय को अर्कमण्यता और निराषा से बचाया तथा उसे मध्ययुग से आधुनिक युग में लाने में सफलता दिलाई सैय्यद अहमद खाँ के प्रयत्न सर्वोपरि रहे और यह स्वीकार किया जाता रहा है कि मुस्लिम जाति की षिक्षा, समाज सुधार तथा जागृति के लिए जो कार्य सैय्यद अहमद खाँ ने किया वह उस समय तक अन्य किसी भी भारतीय मुसलमान ने नहीं किया था। एक विद्धान लेखक के षब्दों में ''उन्होने मुस्लिम समाज और धर्म में सुधार करके उन्हे आधुनिक परिस्थितियों में अनुकूल बनाने का प्रयत्न किया उन्होने मुसलमानों को पष्चिमी सभ्यता और षिक्षा के सम्पर्क में लाकर उन्हे प्रगतिषील बनाने का प्रयत्न किया। अपने इस लक्ष्य में उन्होने काफी कुछ सफलता भी प्राप्त किया। इस प्रकार यह स्वीकार करते हुए भी कि सर सैय्यद अहमद खाँ और अलीगढ़ आंदोलन दोनों ही भारतीय राश्ट्रीयता के विरूद्ध थे, यह मानना पड़ता है कि भारतीय मुसलमानों की षिक्षा और आधुनिकीकरण के लिए उन्होने निस्संदेह ही महत्वपूर्ण कार्य किया। विभिन्न मुस्लिम समाज सुधार आंदोलनों और मुस्लिम समाज सुधारकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप भारतीय मुसलमानों में सामाजिक और राजनीतिक जागृति फैली, उनमें आधुनिक षिक्षा के प्रति लगन पैदा हुई, उनके दृश्टिकोण में कुछ व्यापकता भी आई और कुल मिलाकर मुस्लिम समाज मध्यकालीन संकीर्ण दायरे से मुक्त होने लगा। तथापि साम्प्रदायिकता की भावना कुल मिलाकर बढ़ी ही घटी नहीं जिसके परिणाम स्वरूप 1947 में भारत विभाजन की घटना सामने आई।

संदर्भ ग्रन्थः–

1–दि मेकिंग ऑफ माडर्न इण्डिया, एस0आर0षर्मा

2–दि आक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, वी0 स्मिथ

3–ब्रिटिष कालीन भारत का इतिहास, पी0ई0रार्बट्स

4–कन्सीडरेषन आन इण्डियन अफेयर्स, विलियम वोल्टस

5–भारत का स्वतंत्रता संघर्श, विपिन चन्द्र

6–भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, ताराचन्द

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

7–आधुनिक भारत का इतिहास, जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

8–आधुनिक भारत का इतिहास, एम0एस0जैन

9–दि इण्डियन मुसलमान, डब्लू हण्टर

10–भारत का मुक्ति संग्राम, अयोध्या सिंह

11–आधुनिक भारत, सुमित सरकार

12–माडर्न इस्लाम इन इण्डिया, डब्लू सी0 स्मिथ

13–इण्डियन मुस्लिम्स रामगोपाल

14–दि अलीगढ़ मूवमेंट, एम0एस0जैन

REFERENCES

1. The Making of Modern India, S. R. Sharma
2. The Oxford History of India, V. Smith
3. Brtitish Kaleen Bharat ka Itihaas, P. E. Roberts
4. Consideration on Indian Affairs, William Wolts
5. Bharat ka Swatantrata Sangharsh, Vipin Chandra
6. Bhartiya Swatantrata Andolan ka Itihaas, Tarachand
7. Adhunik Bharat ka Itihaas, Jagannath Prasad Mishra
8. Adhunik Bharat ka Itihaas, M. S. Jain
9. The Indian Muslims, W. Hunter
10. Bharat ka Mukti Sangram, Ayodhya Singh
11. Adhunik Bharat, Sumit Sarkar
12. Modern Islam in India, W. C. Smith
13. Indian Muslims, Ramgopal
14. The Aligarh Movement, M. S. Jain